समाज और संत के बीच लोक कल्याण हेतु सेतु बननेवाला महापुण्य का भागी होता है ।

संत श्री आशारामजी आश्रम द्वारा प्रकाशित

मूल्य : ₹ ४.५०

विद्यार्थी विशेष

लोक कल्याण सेतु

मासिक समाचार पत्र

• प्रकाशन दिनांक : १५ अक्टूबर २०२२ • वर्ष : २६ • अंक : ४ (निरंतर अंक : २०४) • भाषा : हिन्दी • पृष्ठ संख्या : २० (आवरण पृष्ठ सहित)

आप दृढ़व्रती हो जाओ । भगवत्प्राप्ति का संकल्प करके फिर दृढ़ हो जाओ । - पूज्य बापूजी

मेरे गुरुदेव के महाप्रयाण के मधुर संस्मरण

साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज का महानिर्वाण दिवस : २ नवम्बर ७

राजर्षि खट्वांग अपनी आयु की समाप्ति का समय निकट जानकर दो घड़ी में ही इच्छामात्र का त्याग करके ब्रह्मपद को प्राप्त हो गये ।

संकल्प की दृढ़ता से ही देवव्रत ने पिता की प्रसन्नता के लिए आजीवन ब्रह्मचर्य का व्रत पाला और मृत्यु पर विजय पायी । आप आज भी पितामह भीष्म के रूप में विश्वप्रसिद्ध हैं ।

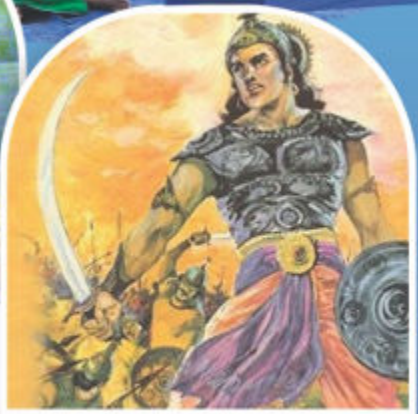

मगधनरेश कुमारगुप्त के १४ साल के बेटे स्कंदगुप्त ने दृढ़ संकल्पशक्ति के प्रभाव से हूण प्रदेश के आततायियों के छक्के छुड़ा दिये थे ।

आत्म-साक्षात्कार करने का विचार पक्का करना चाहिए । उसमें मनोबल चाहिए और मनोबल के लिए दिनचर्या निश्चित होनी चाहिए ।

पढ़ें पृष्ठ ६

परमार्थ व प्रपंच का महान मित्र : ध्यान १०

दरिद्रता व पाप नाशक एवं मनोवांछित फल प्रदायक : गौ-सेवा

(गोपाष्टमी : १ नवम्बर) १६

कहाँ से आ रहा है इतना दूध ? ११

निर्भयता से होगा सामर्थ्य का सदुपयोग - पूज्य बापूजी

जीवन में अगर डर, दुःख और विघ्न-बाधाओं के समय हम तटस्थ होकर, निर्भय हो के विचारते हैं तो हम उनके सिर पर पैर रखकर सफल हो जाते हैं। निर्भय तत्त्व का स्मरण करना चाहिए। देह को मैं मानोगे तो भय बना ही रहेगा। देह पाँच भूतों की है, वह बदलती रहती है। हो-होकर क्या होगा ? रोटी तो भगवान को भी देनी है और लेकर कोई कुछ गया नहीं, सब यहाँ छोड़कर चले गये। फिर चिंता और भय किस बात का ? दूसरे का बड़ा घर, बड़ी गाड़ी देखकर आदमी ईर्ष्या में जलता है परंतु 'दूसरे की गहराई में मेरा ही स्वरूप है' ऐसा चिंतन करते हुए मजा लूटे तो आनंद-ही-आनंद है। जीवन में निश्चिंतता चाहिए। निश्चिंतता ईश्वर पर विश्वास रखने से आती है। अपने आत्मा पर विश्वास रखें। देह पर विश्वास रखेंगे तो भय, चिंता और परेशानी अवश्य आयेगी। आत्मा पर निर्भर होनेवालों में निश्चिंतता, निर्भयता और प्रसन्नता स्वाभाविक आयेगी। आत्मा पर भरोसा रखने से, 'मैं अजर-अमर हूँ, जो हो गया वह सपना है, जो हो रहा है वह भी सपना है और जो होगा वह भी एक सपना है' ऐसा सोचने से निर्भयता आयेगी।

सपने जैसे संसार को सच्चा मानकर सत्यस्वरूप आत्मा की अवहेलना करके हम सुखी होने की जो बेवकूफी करते हैं उससे ही दुःख बन जाता है। संसार-स्वप्न में अपने आत्मा को खोने न दें, बार-बार आत्मचिंतन करें। इससे निर्भयता आयेगी। निर्भयता से मिले हुए सामर्थ्य का सदुपयोग हो तो निर्भयता बढ़ती है। मिली हुई योग्यता, धन, परिचय, बुद्धि का सदुपयोग करने से निर्भय भी होंगे और सत्यस्वरूप ईश्वर में सहज में विश्रांति मिलेगी।

लोक कल्याण सेतु

मासिक
समाचार पत्र

(हिन्दी, गुजराती, मराठी व ओड़िया भाषाओं में प्रकाशित)

वर्ष : २६ अंक : ४ (निरंतर अंक : ३०४)
प्रकाशन दिनांक : १५ अक्टूबर २०२२ मूल्य : ₹ ३.५०
पृष्ठ संख्या : २८ (आवरण पृष्ठ सहित) भाषा : हिन्दी

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम
प्रकाशक और मुद्रक :
राकेशसिंह आर. चंदेल
प्रकाशन-स्थल :
संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात)
मुद्रण-स्थल :
हरि ॐ मैन्युफेक्चरर्स, कुंजा मतरालियों, पौंटा साहिब, सिरमौर, (हि.प्र.) -१७३०२५.
सम्पादक : सिद्धनाथ अग्रवाल

सम्पर्क पता :
'लोक कल्याण सेतु' कार्यालय, संत श्री आशारामजी आश्रम, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-५ (गुज.)
फोन : (०७९) ३९८७७७३९/८८, २७५०५०१०/११.

*Email: lokkalyansetu@ashram.org,
*ashramindia@ashram.org
*Website: www.lokkalyansetu.org
www.ashram.org

लोक कल्याण सेतु' रुद्राक्ष मनका योजना

पूज्य बापूजी के करकमलों से स्पर्शित रुद्राक्ष मनका या जप-माला प्राप्त करने का स्वर्णिम अवसर !...सभी साधक एवं सेवाधारी 'लोक कल्याण सेतु' की इस योजना का लाभ ले सकते हैं।

सदस्यता शुल्क :

भारत में :		विदेशों में :	
(१) वार्षिक :	₹ ३५	(१) पंचवार्षिक :	US $५०
(२) द्विवार्षिक :	₹ ६०	(२) आजीवन :	US $१२५
(३) पंचवार्षिक :	₹ १३०		
(४) आजीवन :	₹ ३४०		

ॐ ॐ ॐ इस अंक में ॐ ॐ ॐ

- पूज्य बापूजी द्वारा भेजा गया मंगलमय संदेश..... ४
- सब आपके विचार की बात है.....८
- मेरे गुरुदेव के महाप्रयाण के मधुर संस्मरण.....९
- राम-तत्त्व का रहस्य.....११
- परमार्थ व प्रपंच का महान मित्र : ध्यान..... १३
- आत्महित हो ऐसा विचार करो - संत तुकारामजी...१४
- घटता पशुधन फिर भी दूध की भरमार... कहाँ से आ रहा है इतना दूध ?.....१५
- सांसारिक प्रेम की असलियत..... १७
- परमेश्वर का सुमिरन बारम्बार करो - संत पथिकजी.....१८
- और बिना ऑपरेशन के मेरा रोग ठीक हो गया - ईशा सेठी.....२०
- श्री उड़िया बाबाजी के साथ प्रश्नोत्तरी.....२०
- शीत ऋतु में बल-पुष्टिवर्धक आहार : चना.....२१
- मनोवांछित फल प्रदायक : गौ-सेवा.....२३
- महापुरुषों के प्रति ऐसी प्रीति करती बेड़ा पार !.....२५

* 'अनादि' चैनल टाटा स्काई/प्ले (चैनल नं. ११७०) व म.प्र., छ.ग., उ.खं. के विभिन्न केबलों पर उपलब्ध है।
* 'डिजियाना दिव्य ज्योति' चैनल मध्य प्रदेश में 'डिजियाना' केबल (चैनल नं. १०९) पर उपलब्ध है। * 'अराधना' चैनल जम्मू में JK Cable पर उपलब्ध है।

* विभिन्न चैनलों पर पूज्य बापूजी का सत्संग *

अनादि बात सिर्फ खबर की — रोज सुबह ६:३० व रात्रि ११ बजे

अराधना — रोज सुबह ७:३० व रात्रि ८:३० बजे

DIGIANA DIVYA JYOTI — रोज रात्रि १०-०० बजे

Mangalmay Digital | Asharamji Bapu | Asharamji Ashram
आश्रम के आधिकारिक यूट्यूब चैनल्स

सेवाकार्य

पूज्य बापूजी द्वारा
भेजा गया
मंगलमय संदेश

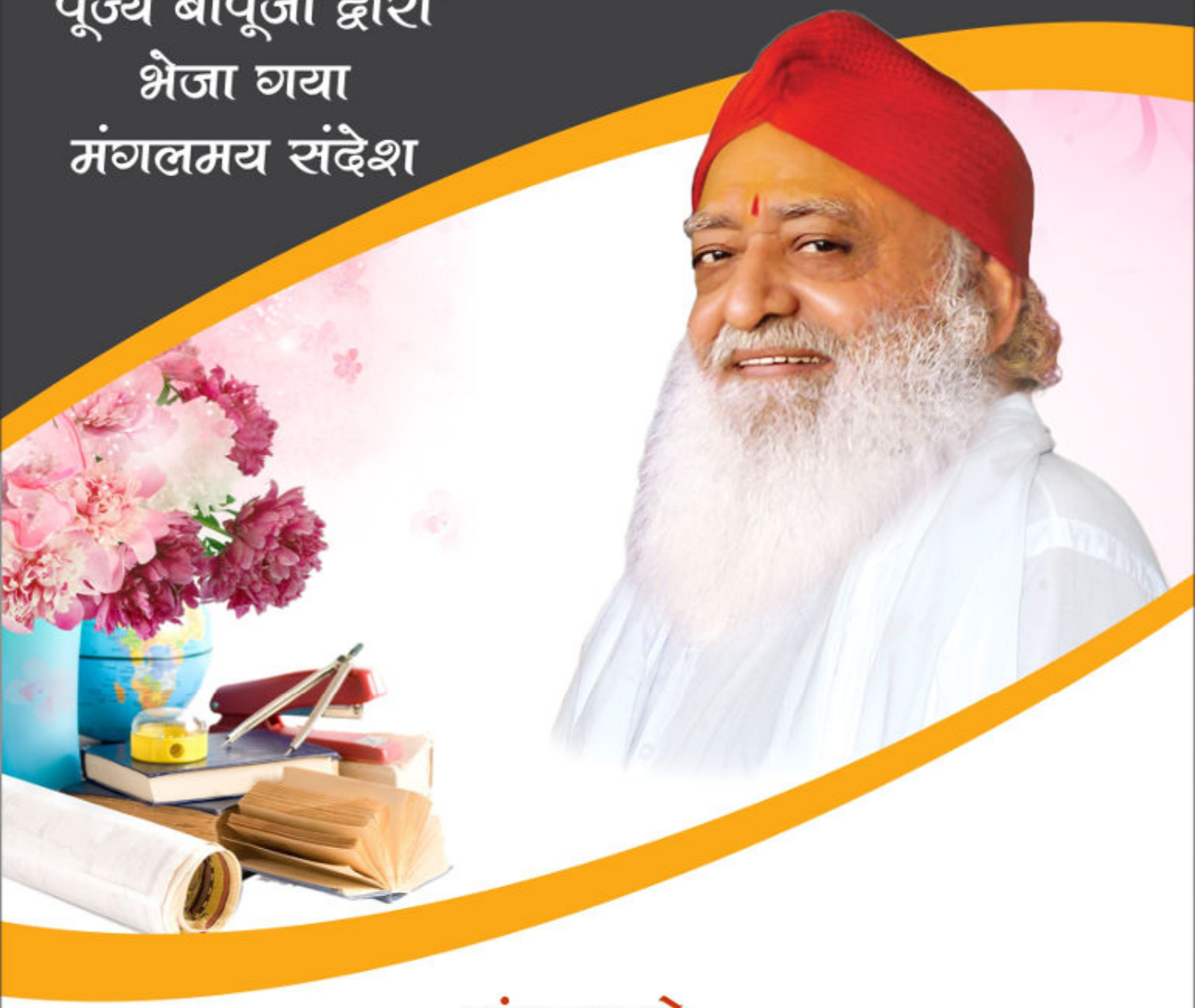

संकल्प से

महासंकल्प की ओर...

हम संकल्पशक्ति के महत्त्व को समझें, बंधनकारी संकल्प न करें अपितु मुक्त करनेवाले, जीवन को सुख-शांति के प्रसाद से सराबोर करनेवाले संकल्प करें। यह करते-करते संकल्प-विकल्पों को शांत करने की कला को जानकर निःसंकल्प अवस्था को प्राप्त करके जीवन्मुक्त हो जायें। यह कैसे हो, सावधान होकर समझो।

'मेरे संकल्प शुभ हों, मेरे व्यवहार में, ज्ञान में सच्चाई हो; मैं उपयोगी, उद्योगी, सहयोगी बनूँ।' इस प्रकार का भाव तुमको बहुत-बहुत मदद करेगा। उद्योगी, उपयोगी, सहयोगी बनने का संकल्प आपमें उद्यम, साहस, धैर्य, बुद्धि, शक्ति, पराक्रम आदि सद्गुण ले आयेगा। आप जो संकल्प दूसरों के प्रति भेजते हैं वे ही घूम-फिरकर आपके पास आते हैं।

सात्त्विक, राजस, तामस अथवा दुष्ट, ऊँचा - इस तरह कई प्रकार के फुरने आते-जाते हैं फिर जैसी तुम्हारी प्रकृति होती है, आदत होती है ऐसे

मेरे गुरुदेव के महाप्रयाण के

मधुर संस्मरण

- पूज्य बापूजी

ब्रह्मलीन भगवत्पाद साँईं श्री लीलाशाहजी महाराज का महानिर्वाण दिवस : २ नवम्बर

वचन दिया तो निभाया भी

सिद्धपुर के भक्तों ने गुरुदेव से प्रार्थना की थी कि 'साँईं ! हमने सिद्धपुर में सत्संग के लिए आपसे प्रार्थना की है । इतने साल हो गये । साँईं ! कब आओगे ?'

बोले : ''भाई ! देखो, समय तो मिलता नहीं है परंतु जाने के पहले तुम्हारे सिद्धपुर में जरूर आऊँगा।''

साँईं तो साँईं हैं बाबा ! ब्रह्मवेत्ता बोल देते हैं तो ब्रह्म-लकीर हो जाती है।

लो, अब उस समय सहज में बोल दिया था तो कहाँ कच्छ-भुज में सत्संग था और उधर से ही गुरुजी ने चिट्ठी लिखवायी : 'भाई ! हम तुम्हारे सिद्धपुर में आ के फिर पालनपुर जायेंगे, तैयारी कर लो।'

पत्र का जमाना था, फोन की सुविधाएँ नहीं थीं। तैयारी हो गयी । उन महापुरुष ने ३०-४० वर्ष पहले का दिया हुआ वचन पूरा किया।

मेरे सौभाग्य हैं कि ऐसे सद्गुरु के श्रीचरणों का सान्निध्य आखिर तक मुझे मिलता रहा।

घटता पशुधन फिर भी दूध की भरमार... कहाँ से आ रहा है इतना दूध ?

लम्पी रोग से झुलसती, मरती गायें

लम्पी रोग की वजह से देश के कई राज्यों का पशुधन काफी स्तर तक प्रभावित हो चुका है। राजस्थान में इसकी भीषणता और अधिक गम्भीर रूप ले चुकी है। लम्पी रोग के कारण प्रदेश में ६० हजार गायों की मौत हो चुकी है जबकि १३ लाख से अधिक संक्रमित हुई हैं। इस कारण त्यौहारों के दिनों में दूध की कमी का संकट खड़ा हो जाना चाहिए लेकिन हैरत की बात यह है कि बाजार में दूध, पनीर और मावा की उपलब्धता में कोई कमी नहीं आयी है। दूध की कमी होने पर भी पूर्ति कहाँ से हो रही है ?

बाजार का अधिकांश दूध पीने योग्य नहीं

दैनिक भास्कर द्वारा कैनंस संस्था के साथ मिलकर जयपुर की दूध मंडियों, दूधियों और प्राइवेट डेयरियों से लिये ३०० नमूनों की प्रतिष्ठित जाँच एजेंसी से जाँच कराने पर दूध के २०० नमूनों में से ५ नमूने ही पीने योग्य पाये गये, बाकी 'फूड सेफ्टी एक्ट' के मानकों के तहत खरे नहीं उतरे। फेल नमूनों में वसा, विटामिन, कैल्शियम और मिनरल्स नहीं पाये गये। दूध के नमूनों में पाम तेल, नमक और चीनी की मिलावट तथा हाई लेवल एसिडिटी पायी गयी। मावा के ५० नमूनों में से २ तथा पनीर के ५० में से ३ नमूने ही पास हुए। यहाँ की कुछ दूध मंडियों के दूध व पनीर के २०-२० नमूनों में से एक भी सेवन योग्य नहीं मिला।

थकान, खून की कमी एवं दर्द देगा ऐसा दूध

विशेषज्ञों के अनुसार शारीरिक पोषण के लिए पर्याप्त मात्रा में विटामिन, प्रोटीन, कैल्शियम और खनिज नहीं मिलने पर थकान, खून की कमी, हड्डियों और मांसपेशियों की कमजोरी जैसे लक्षण दिखाई देते हैं। बच्चों की शारीरिक वृद्धि रुक जाती है। हाथ-पैरों में दर्द होने लगता है। शरीर-पोषण के लिए आवश्यक उपरोक्त तत्त्व जो

शीत ऋतु में बल-पुष्टिवर्धक आहार :

चना

प्रदीप्त जठराग्नि के कारण शीत ऋतु पौष्टिक व बलवर्धक आहार-सेवन के लिए अनुकूल होती है। चने की पौष्टिकता की बराबरी शायद ही कोई अन्य द्विदल अनाज कर सकता है। यह शरीर को बलवान और शक्तिशाली बनाता है।

भूना हुआ चना (काले चने) शीतल, रुक्ष, पचने में हलका, वातकारक, कफ-पित्तशामक तथा रक्तविकार एवं ज्वर का नाशक है। छिलकेरहित चने की अपेक्षा छिलकेसहित चना अधिक पौष्टिक होता है।

आधुनिक अनुसंधानों के अनुसार चने में रेशे (fibres) तथा प्रोटीन, कार्बोहाइड्रेट्स, कैल्शियम, मैग्नेशियम, फॉस्फोरस, पोटैशियम, फोलेट, लौह, विटामिन 'बी', 'सी', 'के' आदि पोषक तत्त्व भरपूर मात्रा में पाये जाते हैं। जिनका शरीर कमजोर है उन्हें सर्दियों में चने का किसी-न-किसी रूप में सेवन अवश्य करना चाहिए।

चने के विभिन्न प्रयोगों द्वारा स्वास्थ्य-लाभ

❊ भिगोये हुए चने :

चने रात को पानी में भिगो दें। सुबह उबालकर अथवा कच्चे, पाचनशक्ति के अनुसार खूब चबा के खाने से बल-वीर्य की वृद्धि होती है। इनमें सोंठ, धनिया व भूने हुए जीरे का चूर्ण, सैंधव (सेंधा

नमक) आदि मिला सकते हैं। शहद के साथ सेवन विशेष ऊर्जा प्रदान करता है। सेवन से पूर्व थोड़ी कसरत या व्यायाम कर लेना और भी उत्तम है। भिगोये हुए अथवा उबाले हुए चनों का पानी भी शक्तिदायी होता है।

❊ चने के आटे की कढ़ी और रोटी :

चने के आटे (बेसन) व छाछ से बनायी गयी गरमागरम कढ़ी पाचक, रुचिकर, पचने में हलकी,

सम्पूर्ण धरा, धर्म, मानवता एवं स्वास्थ्य के लिए, सुखमय, निरामय जीवन के लिए महत्-उपयोगी देशी गाय किसी वरदान से कम नहीं है। इसीलिए इसकी महत्ता संतों ने, सत्शास्त्रों ने, यहाँ तक कि वेदों ने भी खूब गायी, बतायी है।

पूज्य संत श्री आशारामजी बापू द्वारा गौ-सेवा, गौ-पालन के लिए लोगों को प्रेरित करने का कार्य पिछले लगभग ६० वर्षों से बहुत बड़े पैमाने पर होता आया है। जहाँ एक तरफ बापूजी ने गौ-सेवा की महत्ता को समाज तक पहुँचाकर जनजागृति का भगीरथ कार्य किया है, वहीं आपश्री की प्रेरणा एवं मार्गदर्शन से विभिन्न राज्यों में चल रही गौशालाओं में लगभग १० हजार गायों की सेवा प्रतिदिन हो रही है।

आपश्री का गायों के प्रति अपार प्रेम आपके वचनों में भी देखने को मिलता है। गायों को अपने परिवार के सदस्यों जैसा बताते हुए आपश्री कहते हैं : ''लाखों-लाखों, करोड़ों-करोड़ों माई-भाई मेरा परिवार है। १०,००० गायें भी मेरा परिवार है और ग्वाले भी मेरा परिवार है।'' अतः गायों की सेवा हम सबको भी आत्मीयता व आदर से करनी चाहिए।

अग्नि पुराण में आता है कि भगवान धन्वंतरिजी आयुर्वेद के महान आचार्य सुश्रुतजी से कहते हैं : ''सुश्रुत ! गौओं में सम्पूर्ण लोक प्रतिष्ठित हैं। गौओं का गोबर और मूत्र अलक्ष्मी (दरिद्रता) के नाश का सर्वोत्तम साधन है। उनके शरीर को खुजलाना, सींगों को सहलाना और उनको जल पिलाना भी अलक्ष्मी का निवारण करनेवाला है। गाय का मूत्र, गोबर, दूध, दही, घी तथा कुशोदक - ये छः वस्तुएँ (पंचगव्य) पीने के लिए उत्कृष्ट हैं तथा दुःस्वप्नों आदि का निवारण करनेवाली हैं। गौओं को ग्रास देनेवाला स्वर्ग को प्राप्त होता है। जिसके घर में गौएँ दुःखित होकर निवास करती हैं वह मनुष्य नरकगामी होता है। दूसरे की गाय को ग्रास देनेवाला स्वर्ग को और गौ-हित में तत्पर ब्रह्मलोक को प्राप्त होता है। गोदान, गो-माहात्म्य-कीर्तन* और गौ-रक्षण से मानव अपने कुल का उद्धार कर देता है। यह पृथ्वी गौओं के श्वास से पवित्र होती है। उनके स्पर्श से पापों का क्षय होता है। केवल गाय का दूध पी के २१ दिन का अनुष्ठान करने से श्रेष्ठ मानव सम्पूर्ण अभीष्ट

घर-घर कैलेंडर 'दिव्य दर्शन' अभियान (वर्ष २०२३)

साधकगण एवं युवा सेवा संघ के सेवादार भाई इस अभियान के अंतर्गत साधकों, मित्रों, रिश्तेदारों एवं परिचितों के घर जाकर उन्हें दीवाल तिथिपत्र (वॉल कैलेंडर) पहुँचाने की सेवा का लाभ लें।

हिन्दी, देवभाषा संस्कृत, गुजराती, मराठी, ओड़िया, तेलुगु, कन्नड़ एवं अंग्रेजी भाषा में उपलब्ध है।

प्राप्ति : संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों पर तथा श्री योग वेदांत सेवा समितियों एवं साधक-परिवारों के सेवा केन्द्रों पर। ऑनलाइन ऑर्डर हेतु : www.ashramestore.com/calendar
सम्पर्क : (०७९) ६१२१०७३२ (साहित्य विभाग), ८२३८०९१०११ (युवा सेवा संघ मुख्यालय)

विशेष : प्रति कैलेंडर मूल्य मात्र ₹ १५। ८ कैलेंडर लेने पर ₹ २० की आकर्षक छूट के साथ आपको देने हैं मात्र ₹ १००!
२५० या इससे ज्यादा कैलेंडर का ऑर्डर देने पर आप अपना नाम एवं फर्म, दुकान आदि का नाम-पता छपवा सकते हैं। २५० से ९९९ तक छपवाने पर मूल्य ₹ १५.५० तथा १००० या उससे अधिक छपवाने पर मूल्य ₹ १४.५० प्रति कैलेंडर रहेगा।

होमियो तुलसी गोलियाँ

ये हृदयरोग, दमा, टी.बी., हिचकी, विष-विकार, सर्दी-जुकाम, श्वास-खाँसी, खून की कमी, दंतरोग, त्वचा-संबंधी रोग, सिरदर्द, संधिवात, मधुमेह (diabetes), यौन-दुर्बलता, प्रजनन व मूत्रवाही संस्थान के रोगों में लाभकारी हैं। ये हर आयुवर्ग के रोगी तथा निरोगी - सभीके लिए लाभदायी हैं।

हरड़ रसायन गोली

हरड़ रसायन गोली चूसकर खायें, पाचन-समस्या को दूर भगायें...

यह अपचित भोजन को पचानेवाला व शरीर में स्थित कच्चे रस को पकाकर शरीर को शुद्ध करनेवाला उत्तम रसायन योग है। ये गोलियाँ त्रिदोषशामक हैं। इन्हें चूसकर खाने से भूख खुलती है। ये छाती व पेट में संचित कफ को नष्ट करती हैं।

लीवर टॉनिक

सिरप व टेबलेट

सभी प्रकार के यकृत-विकार (liver disorders), खून की कमी, पीलिया, रक्त-विकार, कमजोरी, भूख न लगना, अरुचि, कब्ज, पेटदर्द तथा गैस में अत्यधिक लाभप्रद।

शरीर और बुद्धि के सर्वांगीण विकास के लिए ५६ से भी अधिक बहुमूल्य वनौषधियों से युक्त

च्यवनप्राश

यह बल, वीर्य, स्मरणशक्ति व बुद्धि वर्धक है तथा दीर्घायु, चिरयौवन, प्रतिभाशक्ति देनेवाला है।

स्पेशल च्यवनप्राश केसरयुक्त

सोना, चाँदी, लौह व ताँबा सिद्ध जल में उबले हुए वीर्यवान आँवलों में ५६ से भी अधिक बहुमूल्य जड़ी-बूटियों के साथ चाँदी, लौह, बंग व अभ्रक भस्म एवं शुद्ध केसर मिलाकर बनाया गया विशेष च्यवनप्राश!

उपरोक्त सामग्री संत श्री आशारामजी आश्रमों में सत्साहित्य सेवा केन्द्रों से तथा समितियों से प्राप्त हो सकती है। अन्य उत्पादों व उनके लाभ आदि की विस्तृत जानकारी के लिए एवं घर बैठे रजिस्टर्ड पोस्ट द्वारा सामग्री-प्राप्ति हेतु गूगल प्ले स्टोर से डाउनलोड करें : "Ashram eStore" App या विजिट करें : www.ashramestore.com या सम्पर्क करें : (०७९) ६१२१०७६९. ई-मेल : contact@ashramestore.com

संस्कृति व तीर्थभूमि के प्रति आस्था दर्शाता जनसैलाब

आश्रमों में हुए सामूहिक श्राद्ध-कार्यक्रम

RNI No. 66693/97
RNP No.GAMC-1253-A/2021-2023
Issued by SSPO's-AHD
Valid upto 31-12-2023

WPP No. 02/21-23
(Issued by CPMG UK. valid upto 31-12-2023)
Posting at Dehradun G.P.O. between 18th to 25th of every month.
Publishing on 15th of every month

अहमदाबाद

सूरत

वापी (गुज.)

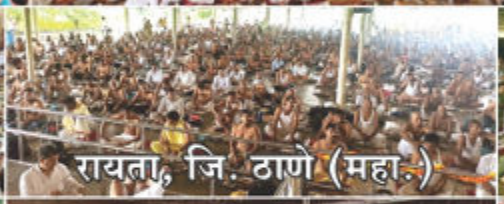
रायता, जि. ठाणे (महा.)

आलंदी, जि. पुणे

हैदराबाद

भोपाल

पटना

करोलबाग-दिल्ली

नाशिक

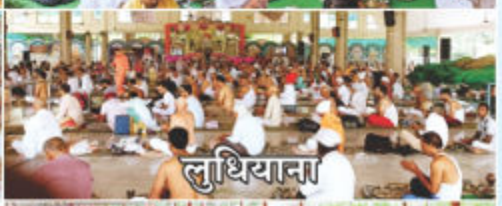
लुधियाना

सुमेरपुर (राज.)

बेंगलुरु

संभाजीनगर (औरंगाबाद)

पंढरपुर (महा.)

राजकोट

कानपुर

आत्मसाक्षात्कार दिवस पर बापूजी के प्यारों की धूम मची है भारी।

संकीर्तन में झूमें बालक, वृद्ध, नर-नारी॥

अहमदाबाद

दाहोद (गुज.)

बाड़मेर (राज.)

ग्वालियर

कोटा (राज.)

कैलिफोर्निया (यू.एस.ए.)

अजमेर (राज.)

रायपुर (छ.ग.)

भावनगर (गुज.)

स्थानाभाव के कारण सभी तस्वीरें नहीं दे पा रहे हैं। अन्य अनेक तस्वीरों हेतु वेबसाइट www.ashram.org/sewa देखें।

स्वामी : संत श्री आशारामजी आश्रम **प्रकाशक और मुद्रक** : राकेशसिंह आर. चंदेल **प्रकाशन-स्थल** : संत श्री आशारामजी आश्रम, मोटेरा, संत श्री आशारामजी बापू आश्रम मार्ग, साबरमती, अहमदाबाद-३८०००५ (गुजरात) **मुद्रण-स्थल** : हरि ॐ मैन्युफेक्चर्स, कुंजा मतरालियों, पाँटा साहिब, सिरमौर (हि.प्र.)-१७३०२५ **सम्पादक** : रणवीर सिंह चौधरी